राष्ट्रीय प्रतीक

राष्ट्र चिह्न

सत्यमेव जयते

National Emblem

NATIONAL SYMBOLS

Digitized by the Internet Archive
in 2018 with funding from
Public.Resource.Org

https://archive.org/details/nationalemblemna00unse

राष्ट्र चिह्न

सत्यमेव जयते

NATIONAL EMBLEM

प्रस्तावना

सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र ने भारत की स्वतंत्रता की 50वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में इसके राष्ट्रीय प्रतीकों – राष्ट्र चिह्न, राष्ट्र ध्वज, राष्ट्र गान, राष्ट्र गीत, कैलेण्डर, राष्ट्रीय पशु, पक्षी तथा पुष्प पर आठ लघु पुस्तिकाएं प्रकाशित की है। ये पुस्तिकाएं भारत के प्राचीन दर्शन व संस्कृति में वर्णित सौंदर्य तथा संवेदना को प्रस्तुत करती हैं।

राष्ट्रीय प्रतीक एक पहचान प्रदान करते हैं और प्रतीकों का चयन प्रायः राष्ट्र विशेष के मूल्यों को प्रतिबिंबित करता है। भारत के राष्ट्रीय प्रतीक आध्यात्मिक तथा भावनात्मक कल्याण व प्रकृति के साथ सामंजस्य हेतु मानवीय उत्कंठा की अभिव्यक्तियां हैं तथा युगों से उसकी कलात्मक सर्जनात्मकता के सूचक हैं।

इन पुस्तिकाओं में स्वतंत्र भारत के राष्ट्रीय प्रतीकों की संक्षिप्त पृष्ठभूमि प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। उदाहरण के लिए, राष्ट्र ध्वज, राष्ट्र गान तथा राष्ट्र गीत हमें भारत के स्वतंत्रता संग्राम की गाथा सुनाते हैं, जिसमें महान साहित्यकार, संगीतकार, समाज सुधारक तथा विचारक भारत को उपनिवेशवादी शासन से स्वतंत्र करने के लिए, मानव जाति के इतिहास में अनूठे ढंग से एक जुट हो गए थे। या, उदाहरणतः बाघ, मोर अथवा कमल पर राष्ट्रीय प्रतीकों की पुस्तकों में हम देख सकते हैं कि किस प्रकार प्रकृति–वनस्पति तथा प्राणिजगत ने चाक्षुष कलाकार, कवि, संगीतकार अथवा नर्तक की रचनात्मक प्रतिभा को प्रेरित किया है। रूढ़ शैली के अनुसार, कमल के अंकन का चरमोत्कर्ष दिल्ली स्थित बहाई मंदिर की वास्तुकला में तथा मुगलकालीन लघुचित्र की समृद्ध धरोहर को सन् 1610 ईसवी में बनाई गई मोर की चित्रकृति में भी देखा जा सकता है। कैलेण्डर सम्बंधी पुस्तिका समय मापने के प्राचीन ज्ञान के इतिहास को बतलाती है, जिसने हमें वर्तमान में प्रयोग में आने वाले विभिन्न कैलेण्डरों को दिया है तथा सम्राट अशोक के दर्शन और उनके समय की कलात्मक अभिव्यक्तियों की महान परंपरा ने भारत को उसका राष्ट्र चिह्न प्रदान किया है।

सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र ने इस प्रकाशन को यथासंभव शिक्षाप्रद बनाने के लिए सरकारी संस्थाओं तथा अन्य प्रामाणिक स्रोतों से उपलब्ध दस्तावेजों में प्रदत्त जानकारी का उपयोग किया है। इस प्रकाशन के निर्माण में अनेकानेक लोगों ने सहायता की है और केन्द्र उन सभी के प्रति आभार प्रदर्शित करता है।

सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र अपना यह प्रकाशन स्वतंत्रता संग्राम के अज्ञात व अवर्णित सैनिकों तथा युवा पीढ़ी को भी समर्पित करता है, जो भविष्य की आशा है, और हमारे महान वैज्ञानिकों, दार्शनिकों, कलाकारों, स्वतंत्रता सेनानियों की सांस्कृतिक परंपराओं, आदर्शों और मूल्यों को आगामी सहस्राब्द में ले जाने वाली है। इस प्रकाशन द्वारा एक भारतीय होने के तथ्य को स्वीकार करने में राष्ट्रीय गौरव तथा स्वाभिमान की भावना उत्पन्न करने का प्रयास किया गया है और आशा की जाती है कि युवा पीढ़ी को, अन्य राष्ट्रों के बीच भारत को एक अग्रणी नेता के रूप में आगे ले जाने के लिए प्रेरित करेगा, जहां मानव तथा प्रकृति के लिए सहनशीलता, प्रेम व आदर तथा संस्कृतियों की विविधता द्वारा सत्य, सौन्दर्य व सद्भावना के विश्व व्यापक मूल्यों की शिक्षा दी जा सकेगी। प्रत्येक पुस्तिका में पाठक के ज्ञान क्षेत्र को बढ़ाने के लिए कुछ रचनात्मक गातिविधियां भी दी गई हैं।

सुरेन्द्र कौल
महानिदेशक

Foreword

For the celebration of the 50th year of India's independence, the Centre for Cultural Resources and Training has produced eight small booklets on the National Symbols of India- the Emblem, Flag, Anthem, Song, Calendar, Animal, Bird and Flower. These bring out the beauty and sensitivity represented in India's ancient philosophy and culture.

National Symbols provide an identity and the choice of symbols often reflect the values of a particular nation. The National Symbols of India are the manifestations of Man's yearning for spiritual and emotional well being, harmony with nature and are the expressions of his artistic creativity through the ages.

An attempt has been made in these booklets to give a brief historical background of the National Symbols of free India. For example, the National Flag, Anthem and Song tell us the story of India's Freedom Movement, where great literateurs, musicians, social reformers and thinkers came together to free India from the colonial rule in a manner unique to the history of mankind. Or, for instance, in the booklets of the National Symbols on the Tiger, Peacock or Lotus, one can see how nature - the flora and fauna have inspired the creative genius of the visual artist, poet, musician or dancer. The culmination of the stylised representation of the Lotus can be seen in the architecture of the Bahai temple in Delhi and the rich heritage of the Mughal miniature painting of the Peacock of circa 1610 C.E. The booklet on the Calendar traces the history of the ancient knowledge of calculating time which has resulted in a variety of calendars in use today and Ashoka's philosophy and the great tradition of artistic expressions of his times have given India its National Emblem.

The CCRT has used information provided in the records available with government agencies and other authentic sources to make this publication as informative as possible. Numerous people have helped in the production of the publication and the Centre would like to express gratitude to all of them.

The CCRT dedicates this publication to the unknown and unsung soldiers of the Freedom Movement and also to the young generation who are, the hope of the future and will carry forward the cultural traditions, ideals and values of our great scientists, philosophers, artists, freedom fighters into the next millennium. This publication endeavours in creating self-esteem and national pride in acknowledging the fact of being an Indian and hopes to inspire the youth to take India forward as a leader among nations ; where tolerance, love, respect for man and nature and the diversity of cultures will instil universal values of truth, beauty and goodness. Each booklet provides suggested activities to enlarge the scope of knowledge of the reader.

Surendra Kaul
Director General

राष्ट्र चिह्न

"भारत की कला में प्रत्येक शैली एक स्पष्ट तथा सचेतन विचार व चेतनता की सहजानुभूति का प्रतीक है। कुछ भी स्वेच्छाचारी अथवा अनूठा, अनिश्चित अथवा गूढ़ नहीं है, क्योंकि सम्पूर्ण प्रतिमावली (मूर्ति समूह) का उद्देश्य बोधगम्य तथा सरलता से समझ में आ सकने योग्य शैली में साकार विचारों को प्रस्तुत करना है।"

इन दो सुबोध वाक्यों द्वारा आनन्द कुमारस्वामी ने संक्षिप्तता तथा सूक्ष्मता सहित भारतीय कला, विशेषकर शिल्पकला के अनिवार्यतः प्रतीकात्मक स्वभाव को अभिव्यक्त किया है। अपनी ही तरह के प्रकृतिवाद के होते हुए भी भारतीय शिल्पकला उत्कृष्ट रूप से प्रतीकात्मक है। विविध चिह्नों तथा प्रतीकों सहित, चाहे विशेषताएं हों अथवा संकेत, प्रत्येक मूर्ति (शिल्प) के निर्दिष्ट रूप में प्रतीकात्मक अर्थ निहित है। प्रत्येक प्रतीक बहुसंयोजक है और प्रत्येक पुराण का विविध के साथ अनेक ग्रंथों में वर्णन होता है। इसके अतिरिक्त, एक शिल्पात्मक प्रस्तुतीकरण को आसानी से पुराण के सुनिश्चित रूपांतर के साथ जोड़ा नहीं जा सकता।

पंडित जवाहरलाल नेहरू ने 27 जुलाई, 1947 को भारत की संविधान सभा को संबोधित करते हुए कहा था कि, ''अशोक काल भारतीय इतिहास का एक अंतराष्ट्रीय काल था। यह वह समय नहीं था, जब भारतीय राजदूत दूर देश में विदेश जाते थे, बल्कि यह वह समय था, जब सम्राटों अथवा साम्राज्यवादियों के रूप में नहीं शांति, संस्कृति और सद्भाव के दूत के रूप में विदेश जाया जाता था।''

26 जनवरी 1950 को जब भारत एक गणतंत्र बना, तब उसने सारनाथ स्थित सम्राट अशोक के सिंह शीर्ष को अपने राष्ट्रीय चिह्न के रूप में स्वीकार किया।

भारत के राष्ट्रीय चिह्न में एक गोलाकार शीर्ष फलक पर एक के पीछे एक बैठे चार सिंहों की आकृति है, जिसके मध्य में एक 24 अरों से युक्त चक्र (पहिया) है। इस शीर्ष फलक का प्रस्तर एक हाथी, एक दौड़ते घोड़े, एक साँड तथा एक सिंह की ऊंची उभारयुक्त आकृति से युक्त शिल्प से अलंकृत है, जो मध्यवर्ती चक्र द्वारा पृथक हैं। चिह्न के नीचे की ओर 'सत्यमेव जयते' देवनागरी लिपि में अंकित है, अर्थात् – 'सत्य की ही विजय होती है'।

भारत का राष्ट्रीय चिह्न सम्राट अशोक के सिंह शीर्ष का आंशिक प्रतिरूप है, जो रूपंकर कला की महान कृति है। इसमें शीर्ष फलक पर बैठे हुए केवल तीन सिंह दिखाई देते हैं, चौथा दिखाई नहीं देता। ये आकृतियाँ एक घंटाकार कमल पर अवस्थित हैं, किन्तु वह आधार राष्ट्रीय चिह्न में दिखाई नहीं देता।

सिंह शीर्ष का, वाराणसी के निकट, सारनाथ में 1905 ईसवी में पता चला, जिसे सामान्यतः सारनाथ सिंह शीर्ष के रूप में उल्लिखित किया जाता है। इस शीर्ष के मूलतः पांच भाग थे, (1) स्तंभ (जो अब टूट कर कई

NATIONAL EMBLEM

"In the art of India, every form is the symbol of a clear and conscious thought and of consciously directed feeling. Nothing is arbitrary or peculiar, nothing is vague or mysterious, for the very raison d'être of all the imagery is to present concrete ideas in comprehensible and easily apprehended forms".

In these two lucid sentences, Ananda Coomaraswamy expressed with brevity and precision the essentially symbolic nature of Indian art, especially sculpture. Representational though it is and its own brand of naturalism notwithstanding, the content of Indian sculpture is highly symbolic. Symbolic meaning is encapsulated in each detail of an image, including the various emblems and symbols, whether attributes or gestures. Every symbol is multivalent, and every myth is recounted in several texts in various redaction. Moreover, a sculptural representation cannot be easily related to a specific version of a myth.

Pandit Jawaharlal Nehru while addressing the Indian Constituent Assembly on July 27, 1947 mentioned "the Ashokan period was essentially an international period of Indian History. It was not a period when Indian Ambassadors went abroad to a far-off country and went abroad not in the way of Emperors and Imperialists but as Ambassadors of peace and culture and goodwill".

India adopted the Sarnath Lion-Capital of Ashoka as her National Emblem on January 26, 1950, the day she became a Republic.

सत्यमेव जयते

Lion capital from Ashoka Stambha, Stone, Sarnath, Uttar Pradesh

हिस्सों मे बिखर चुका है), (2) एक कमलाकार घंटाधार (3) जिस पर चार पशुओं की आकृति सहित एक ढोल आधारित है, जो शीर्ष ढोल के आस–पास दक्षिणावर्त्त दिशा की ओर है, जिसके मध्य में चक्र निदर्शित है, जिसके ऊपर (4) चार तेजस्वी एक दूसरे से सटे सिंह तथा (5) अभिषिक्त तत्वस्वरूप एक धर्मचक्र, अर्थात् एक बड़ा पहिया है, जो टूटी–फूटी हालत में है। अभिषिक्त पहिये (चक्र) तथा कमलाधार को राष्ट्रीय चिह्न में शामिल नहीं किया गया है।

साँड शीर्ष, रामपुरवा, बिहार

सुप्रसिद्ध कला इतिहासकार प्रो. फाउचर ने शीर्ष फलक पर प्रस्तुत चार पशुओं के प्रतीकार्थ का इस प्रकार वर्णन किया है:

"साँड, सिद्धार्थ के जन्म के समय की राशीय नक्षत्र स्थिति अर्थात् वृषभ लग्न का प्रतीक है; हाथी, मायादेवी द्वारा देखे गए गर्भधारण संबंधी उस स्वप्न का प्रतीक है, जिसमें उन्होंने बोधिसत्व को श्वेत हाथी के रूप में अपने गर्भ में प्रवेश करते देखा था; घोड़ा महान आत्मत्याग तथा उस प्रिय युद्धाश्व (जंगी घोड़े) कंथक का प्रतीक है, जिस पर सवार होकर राजकुमार अपना साम्राज्य त्याग कपिलवस्तु से चले गए थे; सिंह, शाक्य–सिंह का प्रतीक है, तथा महात्मा बुद्ध को जब बोधि वृक्ष के नीचे ज्ञान की प्राप्ति हुई तब विश्व को उस महान ज्ञान का उपदेश देने के लिए जब महात्मा बुद्ध ने धर्मचक्र को घुमाया, तब सिंह ग़र्जन सुनाई पड़ा था।"

The National Emblem of India is the figure of four lions seated back to back, on a circular abacus in the centre of which there is a *Chakra* (wheel) having 24 spokes. The frieze of the abacus is adorned with sculpture in high relief of an elephant, a galloping horse, a bull and a lion. These are separated by intervening *Chakras*. The words *"Satyameva Jayate"* are inscribed below the Emblem in the Devanagri script, which means 'Truth alone triumphs'.

The National Emblem of India is a partial reproduction of Ashoka's Lion Capital, which is a great masterpiece of plastic art. In this, only three lions appear resting on the abacus, the fourth being hidden from view. Though these figures rest on a bell shaped lotus, but it does not figure in the National Emblem.

The Lion Capital discovered in 1905 C.E., at Sarnath, near Varanasi (Benaras, Kashi) is generally referred to as Sarnath Lion Capital. The Capital originally consisted of five component parts, (i) the shaft (which is broken in many parts now), (ii) a lotus bell base (iii) on which is based a drum with the four animals proceeding clockwise around the drum of the capital, between which the *chakras* are depicted above which, (iv) the figures of four majestic addorsed lions and (v) the crowning element *Dharam Chakra*, a large wheel that is also lying in a broken condition. The crowning wheel and the lotus vase have not been included in the National Emblem.

Prof. Foucher, eminent art historian explains the symbolism of the four animals on the abacus, which is as follows :

> ***"The bull symbolises the zodiacal constellation at the time of the birth of Siddhartha, Vrishabha lagna; the elephant suggests Mayadevi's dream of her conception, the Bodhisattva entering her womb as a white elephant; the horse suggests the Great Renunciation and the favourite steed Kanthaka on which the Prince rode away from Kapilavastu giving up his empire; the lion stands for Sakya-Simha, the great roar of the lion heard when Buddha turned the wheel of Law to preach to the World the great wisdom that had dawned on him under the Bodhi Tree".***

The Lion-Capital of Ashoka is now placed in Archaeological Museum at Sarnath. Sarnath, as is believed, has been derived from Saranganatha, which means, the "Lord of the Deer". It was a part of *Rishipatana mrigadava* or *Isipatna mrigadava* of Buddhist Texts. As per the texts. Buddha is believed to have preached his first sermon to his five disciples at Sarnath and the event is known as the "Turning of the Wheel of Law"- *Dharmachakrapravartana*.

The Lion Capital is one of the most magnificent specimens of art and the symbolism associated to this outstanding sculpture has been variedly explained. The basic explanation of the *Dharma Chakra*, once crowning the Lion-Capital at Sarnath,

सम्राट अशोक के सिंह शीर्ष को अब सारनाथ के पुरातत्त्व संग्रहालय में रखा गया है। ऐसा विश्वास है कि सारनाथ शब्द सारंगनाथ से गृहित है, जिसका अर्थ है – 'हिरण का भगवान'। यह ऋषिपाटन – मृगदाव अथवा बौद्ध ग्रंथों के इसीपाटन मृगदाव का एक भाग था। इन ग्रंथों के अनुसार, ऐसा विश्वास है कि महात्मा बुद्ध ने सारनाथ में अपने पाँच शिष्यों को अपना प्रथम उपदेश दिया और इस घटना को 'धर्मचक्र प्रवर्तन' के रूप में जाना जाता है।

सिंह शीर्ष, कला की एक अत्यंत उत्कृष्ट प्रस्तुति है और इस शिल्प के साथ जुड़े प्रतीकार्थ का विविध रूपों में वर्णन किया गया है। सारनाथ स्थित सिंह शीर्ष पर अवस्थित 32 अरों से युक्त धर्मचक्र को मूलतः धर्मपरायणता को प्रस्तुत करते, घूमते चक्र के रूप में स्वीकार कर सर्वोच्च माना जाता था। डा. सी. शिवराममूर्ति के अनुसार, ''चार दिशाओं की ओर अभिमुख चार सिंह, काम अथवा मनोभाव के साथ पशु बल के भी प्रतीक थे। इनके नीचे प्रस्तुत कमल अर्थ अथवा संपत्ति का प्रतीक था। निष्कर्षतः काम तथा अर्थ दोनों से, धर्म उच्च है और उन पर बल तथा धर्म के भार द्वारा सतत नियंत्रण रखा जाना है।''

कलिंग (ओड़िशा) पर विजय प्राप्त करने के पश्चात् मौर्य शासक सम्राट अशोक पश्चाताप के उपरान्त बौद्ध धर्म के अनुयायी हो गए और उन्होंने अपना शेष जीवन तथा शक्ति धर्म के प्रचार–प्रसार में ही व्यतीत कर दिया।

सम्राट अशोक के शिलालेख व्यापक विस्तृत क्षेत्र में, पश्चिम में अफ़गानिस्तान, जहाँ सम्राट का संदेश स्थानीय जनता के लिए यूनानी तथा अरामाएक (बाइबिल कालीन उत्तर–पश्चिमी सेमिटिक भाषाओं का एक समूह) में अनूदित किया गया, से ले कर पूर्व में ओड़िशा, उत्तर में नेपाल के सीमावर्ती क्षेत्र तथा दक्षिण में कर्नाटक तक प्राप्त होते हैं। सम्राट अशोक तथा उनके शिलालेखों के साथ सामान्य रूप से जुड़ी वस्तुओं में से समूह रूप में, स्तम्भ शायद सर्वाधिक कुतूहलपरक हैं, हालांकि प्राप्त प्रमाणों के अनुसार, इनमें से कुछ स्तंभ सम्राट अशोक के शासन से पूर्व भी निर्मित हुए हैं।

यद्यपि सभी स्तंभ परंपरागत रूप से सम्राट अशोक तथा उसके धार्मिक कृत्यों से युक्त माने जाते हैं, फिर भी बचे हुए स्तंभो तथा उनके टुकड़ों (खण्डों) को अशोककालीन तथा पूर्व–अशोककालीन (शायद पूर्व–मौर्यकालीन भी) स्मारकों के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है। मूलतः प्रत्येक स्तंभ, एक लम्बे एकाश्म स्तंभ और एक पाषाण शीर्ष से युक्त होता है।

स्तम्भ मूर्तिविज्ञान को सम्राट अशोक का सबसे महत्वपूर्ण योगदान – राजसी तथा वैदिक प्रतीक का एक शैली में प्रवर्तन है, जो बौद्ध धर्म संबंधी उपयोगों हेतु उपयुक्त था। अब तक विद्यमान, सारनाथ स्थित शानदार स्तम्भ (सिंह शीर्ष) बौद्ध मठवासीय समुदाय की एकता के लिए एक मिसाल बना हुआ है। मध्य प्रदेश में सांची स्थित बौद्ध स्थान पर सारनाथ से मिलते–जुलते शीर्ष सहित एक स्तम्भ पर संदेश भी प्राप्त होता है। इस शीर्ष पर उल्लिखित बौद्ध संदेश को भी शायद सिंहो के प्रतीक रूप में शामिल कर दिया गया है, क्योंकि सिंह न केवल राजत्व का उपयुक्त प्राचीन प्रतीक है, और इस प्रकार स्वयं सम्राट अशोक का संदर्भ है, वरन् वह महात्मा बुद्ध के वंशज, शाक्यों का गणचिह्न था, अतः सिंह द्वारा उनका भी संदर्भ दे सकते

presumably with 32 spokes represented the rotating wheel of righteousness which was considered to be supreme. According to Dr. Sivaramamurti, "the four Lions facing the four directions symbolised *Kama* or passion as also the brute force. The lotus below represented *Artha* or wealth. The inference is that *Dharma* is above both *Kama* and *Artha* and they are to *be* kept in constant check by imposing the force and weight of *Dharma*".

Mauryan ruler Ashoka after his conquest of Kalinga (Odisha), was struck with remorse at the suffering he had caused, underwent a conversion (to Buddhism), and spent his remaining life and energy carrying out the *dharma* (law).

Ashokan inscriptions are found in a wide ranging area, extending from Afghanistan on the west, where the emperor's message was translated into Greek and Aramaic for the local population, to Odisha on the east, from the Nepal borderland in the north, into Karnataka in the south. As a group, the pillars are perhaps the most intriguing of the objects generally associated with Ashoka and his inscriptions. Though as per the evidences, some of these pillars were erected prior to Ashoka's reign.

The surviving pillars and pillar fragments may thus be categorised into Ashokan and pre-Ashokan (perhaps even pre-Mauryan) monuments, inspite of the fact that all have been traditionally ascribed to Ashoka and his religious zeal. Originally, each pillar consisted of a long monolithic shaft, and a stone capital.

Ashoka's major contribution to pillar iconography seems to have been a conversion of royal and vedic symbol to a form suitable for Buddhist use. The splendid pillar (lion-capital) at Sarnath, still *in situ* (at site) makes a plea for unity within the Buddhist monastic community *(sangha),* a message also appearing on a pillar with a nearly identical capital at Buddhist site of Sanchi in Madhya Pradesh. The Buddhist message of

Mauryan Pillar

हैं। यह रोचक तथ्य है कि अपने खुले मुँह सहित चार एक–दूसरे से सटे सिंहो ने द्विअर्थी रूपक के रूप में सम्राट अशोक, जिनके वचन स्तम्भ पर अभिलेखित हैं और जिन्हें देश भर में प्रसारित किया जाना था तथा शाक्यमुनि और उनके उपदेशों को प्रतीक स्वरूप प्रस्तुत किया गया है।

चौथी तथा सातवीं शताब्दी में सारनाथ आए चीनी तीर्थयात्रियों फाहियान तथा हवेन सांग ने भी सारनाथ के स्तम्भ की यात्रा की थी। हवेन सांग ने स्तम्भ का वर्णन करते हुए उसे, "हरित मणि के समान चमकदार – – – – प्रकाश के समान झिलमिलाता" बताया है। सुस्पष्ट उत्कीर्णन, चिकनी परिष्कृत तथा उत्कृष्ट कारीगरी ने इस स्थान को, विशेषकर शीर्ष को प्राचीन भारत की महानतम कलात्मक उपलब्धियों में से एक होने का गौरव प्रदान किया है। शीर्ष पर बने सिंह, शीर्ष फलक अथवा ढोलाकार आधार पर बने पशुओं के विपरीत रूढ़ शैली में अंकित हैं, जिनका प्रकृतिवाद जीवित प्राणियों के प्रति कलात्मक संवेदनात्मकता को अभिव्यक्त करता है। विशेष रूप से, सांड, हड़प्पा कालीन मुहरों पर प्राप्त होने वाले रूपों से गहन रूप से संबद्ध प्रतीत होता है। ऐसा प्रतीत होता है कि चार एक – दूसरे से सटे सिंहो के नेत्रों में बेशकीमती पत्थर जड़े गए थे और खुरदरे पहियों के मध्य भाग को तांबे अथवा अन्य किसी धातु द्वारा ढका गया होगा। निश्चित रूप से, स्तम्भ तथा उसका शीर्ष, मौर्य कला की एक शानदार उपलब्धि रही होगी।

सारनाथ स्थित पुरातत्त्व संग्रहालय के सूचीपत्र में प्रस्तुत सिंह शीर्ष के वर्णन का कुछ हिस्सा नीचे प्रस्तुत है:

"अशोक स्तम्भ का शीर्ष (ऊंचाई 7', चौड़ाई, शीर्ष फलक के ऊपर 2'10"),– – – इनमें से तीन पशुओं (शीर्षफलक पर प्रस्तुत चार पशु) को चलते हुए तथा घोड़े को सरपट दौड़ते हुए प्रदर्शित किया गया है। ये सभी आकृतियां थोड़ी–बहुत नष्ट हो चुकी हैं, पर वे चमत्कारी रूप से जीवंत और आकर्षक प्रतीत होती हैं। शीर्ष फलक के ऊपर, एक के पीछे एक बने चार प्राकृत आकार लिए (आदमकद) सिंहो की आकृतियां हैं – इनमें से दो सिंहों की आकृतियां पूर्ण रुप से संरक्षित हैं। अन्य दो सिंहो के सिर अलग से प्राप्त हुए थे, जिन्हें दोबारा जोड़ दिया गया है। एक का ऊपरी जबड़ा तथा दूसरे का निचला जबड़ा पुनः प्राप्त नहीं हो सके थे। नेत्र गोलकों के स्थान पर किन्हीं कीमती पत्थरों को जड़ दिया गया था, जैसा कि ऊपरी तथा निचली पलकों में प्राप्त अत्यंत महीन छेदों से स्पष्ट पता चलता है, जिनमें पत्थरों को सही स्थिति में जड़ने के लिए पतली लोहे की पिनें लगाई गई थीं। ऐसी ही एक पिन अब तक भी एक सिंह की बायीं आंख की ऊपरी पलक में मौजूद है।

शीर्ष को बालूपत्थर के एक ही खण्ड से उत्कीर्ण किया गया था, पर अब यह घंटे के एकदम ऊपर की ओर टूटा हुआ है। मूलतः इस पर बौद्ध धर्म का प्रतीक पहिया

this capital is also probably incorporated into the symbolism of lions, for not only is the lion an appropriate early symbol of royalty, and thus a reference to Ashoka himself, but the Buddha's clan, the Sakyas had the lion as its totem so the lions may refer to him as well. It may be tempting to suggest that the four addorsed lions, with their open mouths, may have served as a dual metaphor referring both to Ashoka, whose words were inscribed on the pillar and were to be spread throughout the land, and to Sakyamuni and his teachings.

The pillar was also seen by two Chinese pilgrims — Fa-hien and Hsuan Tsang who visited Sarnath in the 4th and 7th centuries. Hsuan Tsang described it as "bright as jade . . . . . glistening and sparkling like light". Indeed the crisp carving, smooth polish and high quality of craftsmanship have earned this work, particularly the capital, a reputation of being one of ancient India's greatest artistic achievements. The crowning lions are somewhat stylized in contrast to the drum animals (abacus) whose naturalism suggest the artistic sensitivity to living creatures found as early as the Indus civilization. In particular, the bull relates strongly to forms seen on Harappan seals. It seems that precious gems may have been placed in the eyes of the four addorsed lions and the rough wheel hubs may have been capped by copper or any other metal. Indeed, the pillar and its capital must have been splendid achievements of Mauryan art.

The following are some extracts of the description of the Lion Capital given in the catalogue of the Museum of Archaeology at Sarnath :

> ***"Capital of Ashoka Column (height 7', width across the abacus 2'10") . . . Three of these four animals in the abacus are represented as walking, the horse as running at full gallop. These figures are all more or less damaged, but they are wonderfully life-like and their pose graceful. The abacus is surmounted with figures of four life sized lions placed back to back. Two of them are in perfect preservation. The heads of the other two were found detached and have been refixed. The upper jaw of one and the lower jaw of the other were not recovered. In place of eye-balls, some sort of precious stones were inserted into the sockets, as is clearly shown by the existence of very fine holes in the upper and lower lids, which received thin iron pins to keep the jewels in position. One such pin still remains in the upper lid of the left eye of one of the lions.***
>
> ***The capital was carved out of a single block of sandstone but is now broken across just above the bell. It was originally surmounted by a wheel (chakra), the symbol of the Buddhist Law, supported on a short stone shaft. The latter was not discovered, but its thickness can be estimated from the mortice hole, 8" in diameter, drilled into the stone between the lions' head . . .***
>
> ***The material of which the capital is made is a black spotted buff coloured sandstone from Chunar, but of a much finer grain than the Chunar stone used in the construction of houses in Benaras and its neighbourhood".***

(चक्र) बना हुआ था, जो एक छोटे पत्थर के दण्ड पर टिका हुआ है। इसे आविष्कृत नहीं किया गया, पर इसकी मोटाई का अनुमान, सिंह के सिर के बीच, पत्थर में 8'' के व्यास में किए गए छेद को देख कर लगाया जा सकता है।

शीर्ष का निर्माण, चुनार के काले चित्तीदार पाण्डु (बफ) रंग के बलुआ पत्थर से किया गया है, जो बनारस तथा उसके आस–पास घरों के निर्माण में प्रयुक्त चुनार के पत्थर की तुलना में काफी उत्कृष्ट कणों से युक्त है।'

यह एक अत्यंत रोचक घटना है (और विवादपरक बन गयी है) कि झिलमिलाते और चमकदार प्रकाशीय वस्तुओं की तकनीक भारत में विकसित हुई थी या आयात की गई थी। कुछ प्रमाण ऐसे हैं, जो इस तथ्य को उद्घाटित करते हैं कि पूर्व–मौर्य काल में भी यह शिल्पविधि प्रचलित थी। प्रो. वी. एस. अग्रवाल के अनुसार, भारतीय शिल्पकारों ने दो शिल्प–विधियां विकसित कीं, यथा – धृष्टा और मृष्टा, जिनको प्रयोग में लाने से अन्ततः दर्पण–समान चमक आती थी। यहां तक कि बस्ती जिले के पिपरहवा स्थित स्तूप में प्राप्त पवित्र पात्र (बर्तन) की भी इसी प्रकार की दर्पण समान सतह है, जो 5वीं शताब्दी ई. पू. के समय का है।

यहां तक कि आधुनिक पटना के दीदारगंज अंचल में प्राप्त चौरी वाहक के रूप में उल्लिखित यक्षी की आदमक़द प्रतिमा तथा मौर्य काल की अन्य अनेक पाषाण शिल्पकृतियां भी पश्चिम एशिया के साथ सांस्कृतिक आदान–प्रदान के कारण मानव आकृतियों के निरूपण में उदाहरण सहित प्रतिपादित होती रहीं तथा उत्कृष्ट पॉलिश प्राप्त करती रहीं।

राष्ट्रीय ध्वज के मध्य की श्वेत पट्टी के केन्द्र में 24 अरों से युक्त चक्र अध्यारोपित है। चक्र की संकल्पना अत्यंत प्राचीन है और इसका संदर्भ हमें वैदिक काल में भी प्राप्त होता है। भारतीय कला तथा साहित्य में चक्र अथवा पहिये का एक विशिष्ट अर्थ है।

प्राचीन भारतीय विचारकों ने समय का एक रेखीय नहीं, चक्रीय सिद्धान्त विकसित किया था, जिसे कालचक्र या समय का चक्र कहा जाता है। आरंभ तथा अंत के बिना सृष्टि, अभिव्यक्ति व विलयन की पुनरावर्ती अवस्थाओं पर कायम है। सुदर्शन चक्र अथवा विष्णु, समस्त समाविष्ट प्रेम का एक अंतरिक्षीय घेरा है।

अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्

अर्थात् सब कुछ जो सजीव और निर्जीव है, उसके आसपास सीमाहीन परिधि के अन्दर स्थित अंतरिक्षीय घेरा है।

Chauri-bearer (Yakshi), Lime Stone, Didarganj, Bihar

It is a matter of great interest (and has become debatable) that whether the technique of glistening and sparkling like light objects was evolved in India or was imported. There is some evidence which suggest that even in pre-Mauryan period, this technique was in existence. According to Prof. V.S. Agrawal, Indian sculptors had evolved two techniques namely *Dhrishta* and *Mrishta* which eventually resulted in mirror like shine. The sacred utensil found in the stupa at Piparhava in the district of Basti has the similar mirror like surface and has been dated back to 5th centruy B.C.E.

Even the life size image of a *Yakshi,* also referred to as *Chauri bearer* found in the Didarganj section of modern Patna and many other stone sculptures of Mauryan period exemplified in the treatment of human figures and in attaining exquisite polish, continued because of the cultural interaction with West Asia.

The *Chakra,* figures with 24 spokes, is superimposed at the centre of white colour in the National Flag. The concept of *Chakra* is very ancient and can be traced back to Vedic period. The wheel has a special connotation in Indian art and literature.

महा चक्र (महान चक्र–सूर्य), श्री चक्र, काल चक्र (समय का घूमता चक्र), संसार चक्र, भाव चक्र (मानव जीवन), ब्रह्म चक्र (सृजन का चक्र), ब्रह्माण्ड चक्र (अंतरिक्षीय), ज्योतिष चक्र (प्रकाश का घेरा), राज्य चक्र, कर्म चक्र, धर्म चक्र तथा उपनिषदों, महाकाव्यों और अन्य ग्रंथों में उल्लेखित चक्र रूचिकार अवधारणाएं हैं।

'कस्यात्यन्तं सुखमुपनतं दुःखमेकान्ततो, वा,
नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण।।'
– मेघदूतम् (कालिदास)

कहा गया है कि धर्म का चक्र जीवन तथा भाग्य की अवस्थाएं बताता है। कवि भास ने ''स्वप्नवासवदत्ता'' में चित्रोपम रूप में कविता द्वारा इस तथ्य को वर्णित किया है।

चक्रारपंक्तिरिव गच्छति भाग्यपंक्तिः।।'
–स्वप्नवासवदत्तम् (भास)

प्राचीन भारत में, चक्र की स्तूप तथा स्तम्भ के रूप में पूजा की जाती थी और इसे चक्रमह के नाम से जाना जाता था। हमें अन्य प्रतीकों की पूजा के भी संदर्भ प्राप्त होते हैं, जैसे–वृक्षमह (पेड़); नदीमह (नदियां); सागरमह (समुद्र); नागमह (सर्पादि); सूर्यमह (सूर्य); चंद्रमह (चंद्रमा); पर्वतमह (पर्वत); आदि। अनेक कला संबंधी प्रस्तुतियों में चक्र की पूजा का संदर्भ प्राप्त होता है। भरहुत, सांची, अमरावती, बोधगया तथा मथुरा में ऐसे अनेक उदाहरण प्राप्त होते हैं। पूजा करने के लिए, चक्रों को विशेष रूप से उत्कीर्ण किया जाता था, जिन्हें चक्रपट्ट के नाम से जाना जाता था। स्तूपों में, इन चक्रपट्टों के हार तक्षित किए जाते थे।

बौद्ध साहित्य में चक्र शब्द का अर्थ प्रभुत्व अथवा प्राधिकार का चक्र है। जैन धर्म में भी हमें अत्यन्त प्राचीन समय में की जाने वाली चक्र पूजा का संदर्भ मिलता है।

जीवन चक्र, अटल और अपरिहार्य है। जीवन, पूर्व निर्धारित है और जन्म तथा मृत्यु के चक्र में घूमता है, जिसका अंतिम लक्ष्य मुक्ति अथवा मोक्ष होता है। कुम्हार के चाक की भांति, सृजन का चक्र भी क्रम तथा उचित अथवा न्यायसंगत पद्धति का अनुपालन करता है क्योंकि उसकी गति ब्रह्माण्ड के इस खिलौने (मनुष्य) के रचयिता ब्रह्म द्वारा ही निश्चित की जाती है।

अतः चक्र सृजन का प्रतीक है।

सांची स्तूप नं. 1, हाथियों द्वारा थामा हुआ धर्मचक्र, मध्य प्रदेश

The ancient Indian thinkers had evolved, not a linear but a cyclic theory of time, *Kalachakra* or the wheel of time. The universe is without beginning and without end going on recurrent phases of manifestation and dissolution. The *Sudarshana Chakra* of Vishnu is really a cosmic circle of all-embracing love.

अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्

The Cosmic Circle within the limitless circuit of which is embraced all that is animate and inanimate

The *Maha Chakra* (Great Wheel -- Sun), *Sri Chakra, Kala Chakra* (the revolving wheel of time), *Samsara Chakra, Bhava Chakra* (Human life), *Brahma Chakra* (Wheel of Creation), *Brahmanda Chakra* (Cosmos), *Jyotish Chakra* (the circle of light), *Rajya Chakra, Karma Chakra, Dharma Chakra* (Wheel of law) and other wheels mentioned in the Upanishads, Epics and other texts are interesting concepts.

'कस्यात्यन्तं सुखमुपनतं दुःखमेकान्ततो, वा,
नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण।।'
– मेघदूतम् (कालिदास)

It is said that wheel of law marks the stages of life and of fortune. Poet **Bhasa's Svapnavasavadatta** describes this picturesquely in the line:

चक्रारपंक्तिरिव गच्छति भाग्यपंक्तिः।।'
–स्वप्नवासवदत्तम् (भास)

In ancient India, the *Chakra* was worshipped like stupa and stambha and was known as *Chakramaha.* We find references to other worships of symbols like *Vrikshamaha* (Trees); *Nadimaha* (Rivers); *Sagarmaha* (Oceans); *Nagmaha* (Snakes); *Suryamaha* (Sun); *Chandramaha* (Moon); *Parvatmaha* (Mountains); etc. In many works of art, the worship of *Chakra* is evident. Bharhut, Sanchi, Amravati, Bodhgaya, Mathura are full of such examples. For worshipping the *Chakra,* these were specially carved and were known as *Chakrapatt.* And in stupas, a necklace of these *Chakrapatts* were engraved.

The term *Chakra* in Buddhist literature means dominion or circle of authority. Even in the Jainism, the tradition of *Chakra* worship dates back to very ancient times.

According to Dr. C. Sivaramamurti, "when Buddha turned the wheel of law, he set in motion the wheel of right conduct, right thought, right speech and right action, born of right understanding. The wheel of life is inexorable and inescapable. It is pre-ordained and moves on into a cycle of births and deaths, culminating in final liberation or *Moksha.* Like the potter's wheel, the wheel of creation follows an order and righteous method as it is set in motion by the great Potter, the creator of this toy of a universe, the *Brahmandakulala.*

The Wheel is thus the symbol of creation

राष्ट्रीय चिह्न के नीचे की ओर ''सत्यमेव जयते'' आदर्श–वाक्य अभिलेखित है, जिसे मुण्डक उपनिषद् से लिया गया है। इस उपनिषद् के एक लम्बे श्लोक का यह आरंभिक अंश निम्नानुसार है:

सत्यमेव जयति नानृतं
सत्येन पन्था विततो देवयानः।
येनाक्रमन्त्यृषयो ह्याप्तकामा
यत्र तत्सत्यस्य परमं निधानम् ।।6।।

अर्थात् सत्य ही जय को प्राप्त होता है, मिथ्या नहीं। सत्य से देवयान–मार्ग का विस्तार होता है, जिसके द्वारा आप्तकाम ऋषि लोग उस पद को प्राप्त होते हैं जहां वह सत्य का परम निधान (भण्डार) वर्तमान है।

इस आदर्श–वाक्य के सत्यमेव जयति से सत्यमेव जयते के रूप में वैयाकरणिक परिवर्तन सहित अभिग्रहण के विषय में जानना समुचित व रूचिकर होगा।

हमारे राष्ट्रीय चिह्न का आदर्श–वाक्य मुण्डक उपनिषद् के श्लोक के प्रथम दो शब्दों तक ही प्रतिबंधित है। (यह जानना रूचिकर है कि भारत के महान विद्याविद् डा. राजेन्द्रलाल मित्र ने भी ''सत्यमेव जयति नानृतं'' शब्दों का अपने निजी आदर्श–वाक्य के रूप में उपयोग किया था।) चूँकि यह आदर्श–वाक्य अब हमारे राष्ट्रीय चिह्न का एक भाग बन गया है, व्यक्ति विशेष द्वारा अब इसका उपयोग नहीं किया जा सकता। सिंह शीर्ष, केवल अशोक शीर्ष के नीचे प्रयुक्त हो सकता है, जहां पर स्वयं शीर्ष को प्रयुक्त किए जाने की अनुमति है। हालांकि, यह भी जान लेना चाहिए कि सन् 1950 के पश्चात् अशोक स्तम्भ के सिंह शीर्ष का प्रयोग सिक्कों, नोटों (मुद्रा) तथा सेवा मुहरों, आदि पर किया जाने लगा, पर 15 अगस्त, 1947 तथा 26, जनवरी 1950 के बीच राष्ट्रीय चिह्न में आदर्श वाक्य को प्रस्तुत नहीं किया गया था। इससे कुछ भ्रान्ति उत्पन्न हुई तथा 1963 में वित्त मंत्रालय द्वारा स्थिति को स्पष्ट किया गया, जिसका ब्यौरा निम्न प्रकार है:

"संवैधानिक संशोधन के परिणाम–स्वरूप नोटों (मुद्रा) आदि पर राजा के चित्र के स्थान पर किसी चिह्न का प्रयोग किए जाने की आवश्यकता होने पर इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु अशोक स्तम्भ के शीर्ष को अभिगृहीत किया गया। यह एक संयोग था कि अशोक स्तम्भ का वही शीर्ष आदर्श वाक्य सहित बाद में भारत सरकार के राज्य चिह्न के रूप में स्वीकृत किया गया।"

चिह्न तथा नाम (अनुचित उपयोग निषेधाज्ञा) अधिनियम, 1950 को लागू करते हुए भारत सरकार आदर्श वाक्य के निजी उपयोग पर रोक तथा निषेधाज्ञा लगाती है, क्योंकि इसे राज्य चिह्न में शामिल किया गया है। यह केवल अशोक स्तम्भ शीर्ष के नीचे ही प्रस्तुत हो सकता हैं, जहां पर स्वयं शीर्ष को प्रयोग की अनुमति प्राप्त है।

On the base of the National Emblem is inscribed the motto "Satyameva Jayate", which has been taken from Mundaka Upanishad. *Satyameva Jayate*, as reproduced below, is the opening phrase of a longer verse from this Upanishad :

सत्यमेव जयति नानृतं
सत्येन पन्था विततो देवयानः ।
येनाक्रमन्त्यृषयो ह्याप्तकामा
यत्र तत्सत्यस्य परमं निधानम् ।।6।।

"Truth alone conquers, not untruth. By truth is laid out the path leading to the gods by which the sages who have their desires fulfilled travel to where is that supreme abode of truth",

-Translated by Dr. S Radhakrishnan in The Principal Upanishads

It will be appropriate and interesting to trace the adoption of the motto with a grammatical difference from Satyameva Jayati (सत्यमेव जयति) to Satyameva Jayate (सत्यमेव जयते).

The motto in our National Emblem is restricted to the first two words of the verse in the Mundaka Upanishad. (It is interesting to note that a great Indologist Dr. Rajendralal Mitra had also used the words *"Satyameva Jayati Nanritam"* as his personal motto). As the motto has now become part of our National Emblem, individuals can not any longer use it. It can only appear below the Ashokan Capital where the crest itself is permitted to be used. Although, it may also be noted that coins, currency notes and services stamps, etc. has the crest of the Ashokan pillar but the motto was not there till 1950 as our National Emblem between August 15, 1947 and January 26, 1950, was not then adopted. This created some confusion and the position was clarified by the Ministry of Finance in 1963 as follows :

> ***"As a result of the constitutional change, it became necessary to replace the King's portrait on the notes, etc. with some emblem and the adoption of the crest of the Ashoka pillar was approved for the purpose. It was only incidental that the same crest of the Ashoka pillar with the Motto was later approved as the State Emblem of the Government of India".***

The Government of India by regulating the Emblem and Names (Prevention of Improper Use) Act, 1950, prevents and prohibits private use of the motto as this has been included in the State Emblem. It can only appear below the Ashokan Capital crest where the crest itself is permitted to be used.

भारत के राष्ट्रचिह्न संबंधी आदेश

राष्ट्रीय चिह्न का केवल सरकारी उद्देश्यों हेतु ही उपयोग किया जा सकता है, अर्थात् भारत सरकार के शासकीय उद्देश्यों तथा राज्य सरकार हेतु। नियमों के अनुसार अशोक शीर्ष अभिप्राय को शासकीय मुहरों पर निम्न द्वारा ही प्रयुक्त किया जा सकता है :

- भारत के राष्ट्रपति;
- केन्द्रीय सरकार के मंत्री तथा मंत्रालय;
- विदेश स्थित राजनयिक शिष्टमण्डल;
- राज्यों के राज्यपाल तथा प्रमुख आयुक्त; तथा
- राज्य सरकार के मंत्री और विभाग।

वैधानिक निकायों को राष्ट्रीय चिह्न का उपयोग करने की अनुमति नहीं है। वे भिन्न शीर्षो को अपने हेतु अभिगृहीत कर सकते हैं।

मंत्रियों द्वारा अर्ध–शासकीय उपयोग में लाई जाने वाली लेखन–सामग्री पर नीले रंग से, जबकि इसी प्रकार की अधिकारियों द्वारा प्रयोग में लाई जाने वाली लेखन–सामग्री पर लाल रंग से राष्ट्रीय चिह्न अंकित होता है। कुछ विशेष रूप से उल्लेखित अधिकारियों, जिन्हें विदेशी सरकारों के साथ पत्र–व्यवहार करना होता है, उन्हें भी नीले रंग से अंकित राष्ट्रीय चिह्न से युक्त लेखन सामग्री का उपयोग करने की अनुमति है।

मंत्रियों तथा अधिकारियों द्वारा प्रयोग में लाई जाने वाली लेखन–सामग्री पर संबधित पदाधिकारी अथवा अधिकारी का नाम अंकित नहीं होना चाहिए।

संसद सदस्य भी राष्ट्रीय चिह्नांकित लेखन–सामग्री का उपयोग कर सकते हैं। लोक सभा के सदस्यों के लिए हरा तथा राज्य सभा के सदस्यों हेतु लाल रंग निर्धारित किया गया है।

भारत सरकार ने राष्ट्रीय चिह्न के दो डिज़ाइन तैयार किए थे।

एक डिज़ाइन राष्ट्रीय चिह्न को छोटे आकार में प्रस्तुत करने हेतु, जैसे – अर्ध – शासकीय लेखन–सामग्री, मुहरों तथा डाई–मुद्रण हेतु है। राष्ट्रीय चिह्न की प्रस्तुति सही अर्थो में निर्धारित डिजाइनों के अनुसार ही होनी चाहिए।

सरकार की ओर से निम्न सामग्री पर राष्ट्रीय चिह्न के उपयोग की अनुमति है:

- सरकारी प्रकाशन;
- भारत सरकार के फिल्म प्रभाग द्वारा निर्मित फिल्मादि;
- विदेशों में भारतीय शिष्ट मण्डलों द्वारा उपयोग में लाई जाने वाली कटलरी तथा क्रॉकरी (चीनी के बर्तन); तथा
- विदेशों में स्थित भारतीय शिष्ट मण्डलों के वर्ग – 4 के स्टाफ की वर्दी के मद

Orders relating to the National Emblem of India

The National Emblem can be used for Government purposes only, that is, for official purposes of the Government of India and the State Governments. Rules provide that the Ashokan capital motif can be used for their official seals only by :

i) The President of India;
ii) Ministers and Ministries of the Central Government;
iii) Diplomatic Missions abroad;
iv) Governors of States and Chief Commissioners; and
v) Ministers and Departments of the State Government.

Statutory bodies are not permitted to use the National Emblem. They can adopt distinct crests of their own for their use.

The stationery for demi-official use by the Ministers bears the National Emblem in blue whereas similar stationery for use by officers bears the Emblem in red. A few specified officers, who have to correspond with foreign Governments, have also been permitted to use stationery carrying the Emblem printed in blue.

The stationery used by Ministers and officers should not carry the name of the concerned dignitary or officer.

Members of Parliament can also use stationery bearing the National Emblem. The colour prescribed for members of the Lok Sabha is green and for members of the Rajya Sabha, red.

The Government of India had laid down two designs of the National Emblem. One design is for reproduction in small sizes e.g. for use in demi-official stationery seals and die-printing. Reproduction of the National Emblem must conform strictly to the prescribed designs.

The Government permits the use of the National Emblems on :

i) Government publications;
ii) Films produced by the Films Division of the Government of India;
iii) Crockery and cutlery used by Indian Missions abroad; and
iv) Items of uniform of class-IV staff of Indian Missions abroad.

The National Emblem can be used on Government House Vehicles, i.e. the vehicles of Rashtrapati Bhawan at the Centre and of Raj Bhavans in the States.

राष्ट्रीय चिह्न का सरकारी वाहनों, अर्थात् केन्द्र में राष्ट्रपति भवन के वाहनों तथा राज्यों में राज निवास के वाहनों पर उपयोग किया जा सकता है।

अशोक चक्र युक्त त्रिकोणाकार धातु पट्टिकाओं (जो राष्ट्रीय चिह्न का एक भाग है) का मंत्रियों (उप–मंत्रियों को छोड़ कर) की गाड़ियों पर उपयोग किया जा सकता है।

राष्ट्रीय चिह्न अत्यंत महत्त्वपूर्ण भवनों पर ही प्रदर्शित किया जाता है, जैसे संसद भवन, सचिवालय, आदि।

अप्राधिकृत व्यक्ति तथा निकायों (संस्थाओं) को किसी भी उद्देश्य हेतु राष्ट्रीय चिह्न का उपयोग करने की अनुमति नहीं है। खेल संस्थाओं तथा संघ को अपनी लेखन–सामग्री अथवा भुगतानकर्त्ताओं द्वारा तैयार कराई गई रंगीन जाकिटों पर राष्ट्रीय चिह्न का उपयोग करने की अनुमति नहीं है। यह नियम मंत्रालयों की खेल संस्थाओं और सरकार के अन्य अधिकारियों पर लागू होता है।

चिह्न तथा नाम (अनुचित उपयोग की निषेधाज्ञाएं) अधिनियम, 1950 के अन्तर्गत व्यापार, वाणिज्य तथा व्यवसाय हेतु राष्ट्रीय चिह्न के उपयोग पर रोक है। उपरोक्त उद्देश्यों के लिए भारत सरकार की पूर्व अनुमति के बिना राष्ट्रीय चिह्न का उपयोग करने वाले व्यक्ति अभियोग के जिम्मेदार हैं।

The triangular metal plaques incorporating *Ashoka Chakra* (which is a part of the National Emblem) can be used on the Cars of Ministers (except Deputy Ministers).

The National Emblem is displayed only on very important buildings like the Parliament House, the Secretariat, etc.

Unauthorised persons and bodies are not permitted to use the National Emblem for any purpose. Sports bodies and associations are not permitted to use the National Emblem either on their stationery or on the blazers of the players. This applies to sports bodies of Ministries and other offices of the Government.

The Emblem and Names (Preventions of Improper Use) Act, 1950, prohibits the use of the National Emblem for trade, business, or profession. Persons using the National Emblem for such purposes, without prior permission of the Government of India are liable to be prosecuted.

छात्रों तथा अध्यापकों हेतु रचनात्मक गतिविधियां

जातक कथाओं, पंचतंत्र तथा हितोपदेश पर जानकारी तथा विविध विषय–वस्तुओं के संदर्भ में भारतीय कला की शिल्प कृतियों में प्रदर्शित पक्षियों तथा पशुओं के चित्र व फोटोग्राफ्ज भी एकत्रित कीजिए।

वैदिक काल से लेकर समकालीन काल तक एकाश्म *(मोनोलिथिक)* स्तम्भों के विकास को विविध रूपों व परिकल्पनाओं में प्रदर्शित करती एक फोटो प्रदर्शनी की कल्पना कर, तैयार कीजिए।

विविध भारतीय राज्यों तथा संघ शासित प्रदेशों के प्रतीक चिह्न का संग्रह कर इन प्रतीक चिह्न के अभिग्रहण (एडाप्शन) संबंधी जानकारी एकत्रित कीजिए।

विश्व भर की विभिन्न संस्कृतियों में जारी किए गए शैल आदेश पत्रों *(रॉक एडिक्ट्स)* के चित्र एकत्रित कीजिए।

"सत्यमेव जयति" किस प्रकार "सत्यमेव जयते" हो गया, इस पर विद्वानों/प्रसिद्ध व्यक्तियों/इतिहासकारों/राजनैतिक नेताओं के साथ चर्चा कीजिए।

पत्थर तथा धातु का कार्य करने वाले शिल्पकारों का साक्षात्कार करके उनकी कला, जीवन–शैली, कार्य सारणी की जानकारी लीजिए।

चट्टानों तथा ताड़ के पत्तों आदि पर लिखी गई प्राचीन भारतीय लिपि का अर्थ ढूंढिए।

पुरालेख शास्त्र के क्षेत्र में कार्यरत संगठनों तथा व्यक्तियों के विषय में और अधिक जानने की चेष्टा कीजिए।

Creative Activities for Students and Teachers

Collect information on Jataka tales, Panchatantra and Hitopadesha. And also collect paintings, photos of sculptures in Indian art showing birds and animals in various themes.

Conceptualize and design a photo exhibition showing development of monolithic pillars from Vedic times till contemporary period in various forms and designs.

Make a collection of Emblems of various Indian States and Union Territories and the information on the adoption of these emblems.

Collect pictures of rock edicts made in different cultures all around the world and organise an exhibition.

Discuss with scholars/eminent people/historians/political leaders as to how *"Satyameva Jayati"* became *"Satyameva Jayate"*.

Interview the craftsmen working with stone, metal and glass and get information about their art, life style and work schedule.

Learn to decipher ancient Indian scripts used in rocks and palm leaves, etc.

Try to find more about the institutions and individuals/persons engaged in epigraphy.

About CCRT

The Centre for Cultural Resources and Training (CCRT) has been set up in the service of education specialising in the area of linking education with culture. In its academic programmes it has conducted researches in the study of methodologies for providing a cultural input in curriculum teaching. The CCRT organizes a variety of training programmes for administrators, teacher educators, in service teachers of all levels and students. These aim at sensitizing the participants to the aesthetic and cultural norms governing all creative expressions. Educational visits to historical sites and museums encourage participants to use these as extended centres of learning. The major focus of the training, however, is on project work and preparation of action plans for integrating various educational disciplines using a cultural base. The training also provides an opportunity to acquire skills in traditional arts and crafts so that this knowledge may be used to discover the creative potential of the students.

To supplement the training, the CCRT collects resources in the form of sound recordings, slides and photographs, films and other audio-visual materials on the arts and crafts. These are then used to produce teaching materials for creating an understanding and appreciation of the diversity and continuity of the Indian cultural traditions.

The CCRT's audio-visual and printed material on the arts and crafts of India are being widely used for cultural education. Though some of these materials focus on a specific art form, they are also used to enrich teaching of different disciplines of the curriculum. The publications include sets of illustrated material with suggested activities for students and teachers. The digital slide-album of performing arts, natural environment and plastic/visual arts containing images alongwith descriptions cover a wide range of cultural manifestations. The films on the traditional performing arts and on historical and cultural sites are informative and aesthetically produced.

Since 1982, the CCRT is implementing the Cultural Talent Search Scholarship Scheme and is giving scholarships to talented school going children in the age group of 10-14 years to study the traditional arts and crafts of their regions.

The CCRT has been awarded for implementation the Scheme namely "Award of Scholarships to Young Artistes in different Cultural fields", under which 400 scholarships are provided in the age group 18-25 years in the field of Indian Classical Music, Classical Dances, Light Classical Music, Theatre, Visual Arts and Folk, Traditional and Indigenous Arts.

The CCRT has also been awarded for implementation the Fellowship Scheme namely "Award of Fellowship to outstanding persons in the Field of Culture", under which 200 Junior and Senior Fellows each are selected every year. The focus is on "in-depth study/research" in various facets of culture. These include New Emerging Areas of Cultural Studies.

The CCRT has instituted a few awards for trained teachers who are doing commendable work in the field of education and culture.

For further details you may visit our website: www.ccrtindia.gov.in

References

Agrawal, V.S., (1967), "Chakra-Dhvaj", New Delhi.

Brown, Percy, (1974), "Indian Architecture : Buddhist and Hindu", Bombay.

Marshall, John, "The Cambridge History of India".

Mookerji, Radhakumud, "Our National Insignia".

Mundaka Upanishad, (1990), Gorakhpur.

Radhakrishnan, S., (1953), Trans. "The Principal Upanishads", London.

Sahni, Daya Ram, (1914), "Catalogue of the Museum of Archaeology of Sarnath", Kolkata.

Sharma, B.R., "Chakra, The Symbol of eternity through the ages, Vishvesharanand Indological Journal", (March and September, 1970).

Sivaramamurti, C., (1967), "Our National Emblem", New Delhi.

Sivaramamurti, C., "The Art of India".

This package contains booklets on the following National Symbols

National Emblem	National Flower
National Flag	National Bird
National Anthem	National Animal
National Song	National Calendar

पुनश्च : ''सिंह स्तंभ शीर्ष के नीचे देवनागरी लिपि में लिखे आदर्श वाक्य – 'सत्यमेव जयते' (सत्य की ही विजय होती है) के साथ भारत के राज्य संप्रतीक के प्रदर्शन के संबंध में परामर्श''; ''भारत का राज्य संप्रतीक (अनुचित प्रयोग प्रतिषेध) अधिनियम, 2005''; ''भारत का राज्य संप्रतीक (प्रयोग का विनियमन) नियम, 2007'' तथा ''भारत का राज्य संप्रतीक (प्रयोग का विनियमन) संशोधन नियम, 2010'' में उद्धृत विस्तृत मार्गदर्शिकाओं के लिए कृपया गृह मंत्रालय, भारत सरकार की वेबसाइट : www.mha.nic.in का संदर्भ ग्रहण करें।

P.S. Kindly refer to the website of Ministry of Home Affairs/*Grih Mantralaya* i.e. www.mha.nic.in for detailed guidelines mentioned in the "Advisory related to the display of complete State Emblem of India with the motto "*Satyameva Jayate*"- "Truth alone triumphs" - written in *Devanagari* script below the profile of the Lion Capital"; "The State Emblem of India (Prohibition of Improper Use) Act, 2005"; "The State Emblem of India (Regulation of Use) Rules, 2007" and "The State Emblem of India (Regulation of Use) Amendment Rules, 2010".

First Edition 1998
Reprint Edition 2017
Published by Director
Centre for Cultural Resources and Training
15-A, Sector-7, Dwarka
New Delhi (India)

© Centre for Cultural Resources and Training 2017

ALL RIGHTS RESERVED

No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior written permission of the Centre for Cultural Resources and Training

Printed at India Offset Press, Delhi-110064